City Weather
Sunrise: 6.20 am
34.2
15.4
HUMIDITY
Sunset: 6.08
Morning: 62 %
Evening: 34 %

FREE PRESS
INDORE JOURNAL
Indore ■ Saturday October 8, 2005 11

AESTHETIC CARVINGS

Marble sculptures displayed on Vrindavan lawns at Hotel Sayaji as part of the National Art Fair that was inaugurated on Thursday. About 500 artists exhibit their work in this fair organised by Kalavart Nyas. Free Press photo

14 ejournal
Free Press ■ Indore ■ Saturday October 8, 2005

Colour ballet at Kalavart National Art Fair 2005

OUR STAFF REPORTER
INDORE

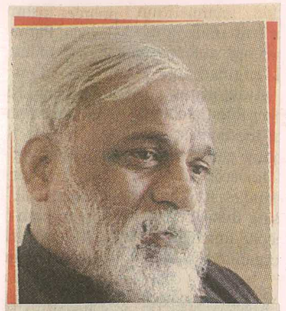

Pramod Ganpatye

सौ की एक बात

बिना परिश्रम किए कोई संसार में पूज्य नहीं होता। अनेक बार रगड़ खा-खाकर पत्थर शालिग्राम (ठाकुरजी) बन जाता है।

-सत्यदेव परिव्राजक

नईदुनिया
इंदौर सिटी
सोमवार, 10 अक्टूबर 2005 ■

NAVRATRI

KALAVART NATIONAL ART FAIR INDORE

चौथा संसार | महानगर | इन्दौर, सोमवार 10 अक्टूबर, 2005 2

इन्दौर के कलाप्रेमियों ने वरिष्ठों के साथ युवा कलाकारों की पेंटिंग को भी सराहा

कलाकार

Nature is his favourite artwork and what creates art is discovering a new perspective of looking at life. To challenge the existing beliefs and question them is his source of energy.

प्रवीण जोशी

नीय राष्ट्रीय कलावर्त कला मेले का आज ९वां और अंतिम दिन साथ कुछ नए कलाकारों के चित्र भी यहां कलाप्रेमियों ने देखे पारे में संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत है -

सूक्ष्मदर्शी कलाकार दीनानाथ भार्गव

इन्दौर के वरिष्ठ चित्रकारों में एक नाम दीनानाथ भार्गव का है। उन्होंने भारतीय संविधान के आवरण पृष्ठ का रेखांकन ख्यात चित्रकार नंदलाल बोस के साथ किया। चित्रों की गहरी समझ है। कला मेले में श्री भार्गव की पेंटिंग लगी। वे कहते हैं भारतीय पेंटिंग में सभी कलाओं के दर्शन होते हैं

पिकासो की पेंटिंग में मधुबनी चित्रकला का प्रतिबिंब है। शांति निकेतन से फाइन आर्टस और पेंटिंग की शिक्षा लेने के बाद श्री भार्गव के चित्रों को सराहा जाने लगा। उनके द्वारा आविष्कार की गई घुमावदार स्क्रीन प्रिंटिंग टेबल आज इन्दौर के बुनकर सेवा केन्द्र में काम कर रहा है। उन्होंने ऐतिहासिक विषयों पर पेंटिंग की। धर्म, जीवन, इतिहास, प्रकृति आदि विषयों पर उन्होंने पेंटिंग बनाई। वे कहते हैं अमूर्त चित्र भी मन में भाव पैदा करते हैं लेकिन यथार्थ चित्रों की बात अलग है। वे एक सूक्ष्मदर्शी कलाकार हैं और अनुभव का खजाना है।

विविधता से भरी शुक्ला की पेंटिंग

कला मेले में मुंबई से प्रतिभागी महिला चित्रकार **शुक्ला चौधरी** की पेंटिंग विविध रंगों से भरी है। उनके चित्रों में यथार्थता है तो कहीं अमूर्तता। गत २५ वर्षों से वे इसी विधा पर काम कर रही है। देश की कई आर्ट गैलरियों में इस महिला चित्रकार की पेंटिंग प्रदर्शनी हो चुकी। विदेशों में भी उन्हें सराहा गया। चित्रकारी के अलावा चौधरी एक कुशल नृत्यांगना है। उन्होंने ३० वर्ष पूर्व शांति निकेतन के कला भवन से फाइन आर्ट्स में बी.ए. किया।

अलहदा है रंगों का संयोजन

युवा चित्रकार **सोनाली पिठवे (देवास)** के चित्रों में प्रकृति में बिखरे कई रंग, दृश्य, पेड़-पौधे, पंक्षी एवं मानव जीवन से जुड़ी चीजों का आभास होता है। इन चित्रों में रंग संयोजन इस प्रकार का होता है कि कई रंग होने के बाद भी कोई रंग अपनी विशेषता नहीं खोता। सभी रंग आपस में मिलकर एक कलाकृति को सुन्दर और आकर्षक बनाते। इसके अलावा

मुंबई से अपनी कलाकार मां शुक्ला चौधरी के साथ कला मेले में आई सुधामृता चौधरी का मानना है कि कला एक दृष्टि है, एक विचार है। जैसे इनसान सांस लेना नहीं भूलता, वैसे एक कलाकार पेंटिंग बनाना नहीं भूलता। वह उसके जीवन के साथ जुड़ी है। रचना पोत्दार के अनुसार एक

लाइन में कला को परिभाषि करना कठिन है। इतना जरूर जानती हूं कि कला को पंख तभी लगते हैं, जब उसे लगन और उत्साह से किया जाए।

अद्भुत सम्मोहन है इन चित्रों में

इंदौर, 9 अक्टूबर

ऐसा लगता है कि वहाँ रंगों की एक अलग दुनिया ही बस गई है। उस दुनिया में बस आप हैं और आपको सागर जैसी गहराई में डुबो देने वाले चित्र हैं। हर एक चित्र आपको एक अलग जहाँ में ले जाता है। चित्रों में सम्मोहन इस कदर है कि आप उनके सामने खड़े रहें तो उन्हें बस देखते ही रह जाएँ। विचारों और कला की अभिव्यक्ति कितनी सशक्त और कितनी अर्थपूर्ण हो सकती है, इसका अंदाजा आप उन चित्रों को देखकर लगा सकते हैं। चित्र में पोटली है या उसे चित्र के ऊपर लटकाया गया है, चित्र को उपहार में देने के लिए उसे कपड़े और रिबन से बाँधकर रखा है या यही उस चित्र की खासियत है, आप किसी महल में खड़े हैं या वह सिर्फ एक चित्र मात्र है। कुछ इस प्रकार के प्रश्न आपके मन में भी आएँगे, जब आप सयाजी होटल में कलावर्त न्यास के राष्ट्रीय कला मेले में जाकर चित्रों को निहारेंगे।

इस पाँच दिवसीय राष्ट्रीय कला मेले में एक हजार से भी ज्यादा चित्रों को प्रदर्शित किया गया है। मेले में 25 वरिष्ठ और करीब 70 कनिष्ठ कलाकार शिरकत कर रहे हैं। चित्रों को निहारते-निहारते जब आप कलावर्त वैसे कला को कीमत से नहीं आँका जा सकता पर यहाँ पर रखे गए चित्रों की कीमत चार से दस लाख रुपए है। श्री विजेंदर शर्मा द्वारा बनाया गया एक चित्र कला मेले में सबसे महँगा है, जिसकी कीमत दस लाख रुपए है। इस चित्र में दीवार पर टँगी एक पोटली नजर आती है। थोड़ी दूरी से देखने पर यही आभास

KALAVART NATIONAL ART FAIR INDORE

होता है कि चित्र के ऊपर पोटली टँगी है, जबकि असल में पोटली चित्र में ही है। यही इस चित्र की खासियत है कि पोटली असली लगती है। दीवार पर पोटली और पोटली की डोरी की परछाई चित्र को जीवंत बनाती है। श्री शाह का ही एक और चित्र आपको अचंभे में डाल देता है। ऐसा लगता है कि इस चित्र को कपड़े और रिबन से बाँधकर रखा है, पर असल में चित्र ही ऐसा है और यही इसकी खासियत है। चित्र में कपड़े की सलवटें और रिबन की परछाई को बड़ी खूबसूरती से बनाया गया चित्र इतना खूबसूरत और सजीव है कि ऐसा प्रतीत होता है कि एक महल में ही खड़े हैं। चित्र में महल के गलियारे को दर्शाया गया है। एक और चित्र में राजघराने की एक महिला बैठी हुई है। यह चित्र भी बेहद आकर्षक है।

कालिदास अकादमी उज्जैन के स्टॉल में लगे चित्रों में कालिदास की कृति 'अभिज्ञान शाकुंतलम' की झलक दिखाई देती है। श्री भालू मोंढे ने उन्मुक्त वातावरण में खड़ी युवती का बेहद ही खूबसूरत चित्र प्रदर्शित किया है। रिफ्लेक्शन द आर्ट एंड कल्चरल सोसायटी के छायाकार श्री राजेंद्र वाध्या द्वारा खींचे गए ताजमहल और ग्रामीण परिदृश्य के चित्र भी आपको कुछ क्षण वहाँ खड़े रहने को मजबूर कर देते हैं। दिल्ली के ही श्री माँगेराम शर्मा ने वेजिटेबल कलर्स का उपयोग कर एक चित्र बनाया है। एक ही चित्र में उन्होंने श्रीकृष्ण के जन्मकाल से लेकर महाभारत तक के प्रसंगों को दर्शाया है। श्री संदीप राशिनकर ने ब्रास वेंचर नाम की एक नई कला को प्रदर्शित किया है। इसके अलावा ख्यात चित्रकार श्री जतिन दास, श्री सुहास बहुलकर, श्री विजेंदर शर्मा, श्री डी.एन. भार्गव आदि के चित्र इस कला मेले का मुख्य आकर्षण हैं। श्री मनोहर कजल, सुश्री सपना राठौड़, श्री राजेश नामदेव, श्री सत्येंद्र विश्वकर्मा आदि

सांध्य चौथा संसार